रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरुष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति के द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में उड़ान असम्भव है।"

वर्ष—5 अंक 51 मई 2011 मूल्यः 5रू.

बरली संस्थान और बटिक कला

बटिक का परिचय

बटिक प्रिंटिंग या बटिक छपाई एक बहुत ही सुंदर और प्रसिद्ध कला है। बटिक करने के लिए कपड़े के चयन के बाद, उस पर मोम से डिजाइन बनाया जाता है। फिर कपड़े को रंगा जाता है। इसके बाद, कपड़े को सूखने के लिए छोड़ दिया जाता है। इसके बाद गर्म कर मोम निकाल लिया जाता है, जिससे कपड़े पर डिजाइन बना रह जाता है। जहाँ मोम का उपयोग होता है वहाँ पुराना रंग सुरक्षित बचा रहता है। जब कि कपड़े के बचे हुए हिस्से को नए रंग से रंग लिया जाता है। अनेकों रंगों वाला डिजाइन बनाने के लिए बार—बार मोम लगाना तथा उसे बार—बार रंगना पड़ता है। रंगाई का काम हल्के रंगों से शुरू होता है और लगातार गहरे रंगों की ओर बढ़ता जाता है।

इस प्रिंटिंग का सबसे अधिक विस्तार मध्यप्रदेश में ही हुआ है। साथ ही सबसे ज्यादा सुन्दर व तकनीकी रूप से बेहतर बटिक भी मध्यप्रदेश में ही देखने को आया है।

बटिक प्रिंटिंग को भारत के छिपे समूह के लोगो ने पीढ़ी दर पीढ़ी जीवित रखा है। इन्हें देखकर अन्य वर्गों और समुदाय के लोगों में इस कला के प्रति रूचि हुई और वे भी बटिक प्रिंटिंग करने लग गए है।

बटिक की सबसे बड़ी विशेषता है कपड़े के ऊपर दिखने वाली दरारे जिन्हें क्रैक कहा जाता है। ये मोम में डाली जाने वाली दरारों के बीच से रंगों के उसमे समां जाने से कपड़े पर बनती है। बटिक से सुन्दर साड़ी, सूट, पर्दे और चादर बनाए जाते है। इस बार की बरली की दुनिया आपके पास बटिक की जानकारी लेकर आ रही है कि यह क्या है, इसे कैसे करते है, इससे क्या—क्या बना सकते है और इसको सीखकर आत्मनिर्भर कैसे हो सकते है।

बरली संस्थान में बटिक प्रशिक्षण की शुरुआत

बरली संस्थान में बटिक प्रशिक्षण की शुरुआत वर्ष 1990 में हुई।

इसका उद्देश्य था ग्रामीण महिलाओ को बटिक कला का उपयोग करते हुए आत्म निर्भर बनाना और बटिक कला का विस्तार करना। ग्रामीण व आदिवासी महिलाओ को आत्म निर्भर होने के लिए आवश्यक है कि वो अपनी जीविका के लिए किसी दूसरे पर निर्भर नहीं रहे। इसी को ध्यान में रखते हुए यहाँ रहने वाली महिलाओं को विभिन्न शिल्प सिखाए जाते है। इसी दिशा में यह प्रयास किया गया है कि महिलाओ को कपड़ो पर होने वाली पारंपरिक प्रिंटिंग सिखाई जाए। साथ ही संस्थान यह भी प्रयास कर रहा है कि यहाँ से प्रशिक्षित प्रिंटर (छपाई करने वाली) अपनी अलग पहचान बना पाए।

बटिक का प्रशिक्षण लेकर महिलाएँ स्वंय या अपना कोई समूह बना कर बटिक प्रिंटिंग से कोई रोज़गार शुरू कर आत्म निर्भर होकर सशक्त हो सकती है।

बटिक की उपयोगिता

बटिक कला को ज्यादा से ज्यादा ऐसे लोगो तक पहुँचाना है जो तकनीकी ज्ञान से दूर है। बटिक सीखने के बाद महिलाएँ इसे अपनी कमाई का साधन बना सकती है। वे अपने खुद का व्यवसाय शुरू कर सकती है या दूसरों को भी इसका प्रशिक्षण देकर पैसे कमा सकती है।

हाथ छपाई के तरीके

बंधेज– बंधेज भी रेजिस्ट प्रणाली में रंगाई की तकनीक है। इसमें कपड़े पर डिजाईन बनाकर उसे धागे से कस कर बांधा जाता है। बाद में जब कपड़े को डुबोया जाता है तब उस स्थान पर रंग नही चढ़ता।

इकत– यह रंगाई की एक विशिष्ट विद्या है। जिसके अंतर्गत धागे को बुनाई के पूर्व रंगा जाता है। धागों को डिजाईन के अनुरूप अलग अलग जगह पर बांध कर रंगा जाता है।

ब्लाक प्रिंटिंग या ठप्पा छपाई– जैसे–जैसे सजावटी और चित्रकारी वाले कपड़ों कि मांगे बढ़ती जा रही है वैसे–वैसे कम समय में अधिक उत्पादन की तकनीकों के विकास की दिशा में भी प्रयत्न हुए। ब्लाक या ठप्पा छपाई इसी की कड़ी है।

बटिक छपाई या बटिक प्रिंटिंग– इसके कई तरीके है। स्पलैश अर्थात छिड़काव पद्धति से कपड़े पर मोम या तो उड़ेल दिया जाता है या छिड़क दिया जाता है।

बटिक प्रिंटिंग करना

बटिक प्रिंटिंग करने के लिए निम्नलिखित पांच काम करने होते है:

- कपड़े को तैयार करना
- डिजाईन बनाना
- मोम लगाना
- कपड़े की रंगाई करना
- मोम निकालना

बटिक के लिए आवश्यक सामान

बिना धुला हुआ कपड़ा या लठ्ठा (100 प्रतिशत सूती), प्लास्टिक का एक बड़ा टब, बड़ी मेज़ या समतल जमीन, बालू या रेत, नापने का कप, रबर के दो मोटे दस्ताने, तराजू, कास्टिक सोडा।

बटिक प्रिंटिंग के लिए कपड़ा तैयार करना

कपड़ा तैयार करने के लिए ब्लीचिंग पावडर (सफेदी के लिए),
कपड़े धोने का पावडर
टीनोपोल (सफेदी के लिए)
स्लरी (सफाई के लिए)
तरल केमिकल
कपड़े धोने का सोडा (सफेदी के लिए)

प्रिंटिंग करने से पहले की तैयारी

बटिक प्रिंटिंग केवल सूती और रेशमी कपड़े पर ही की जाती है। एक बड़े टब में 10 से 15 लीटर पानी ले। फिर इसमें 150 ग्राम टर्की रेड आयल डाले और कपड़े को अच्छी तरह से डुबाए और रात भर डूबा रहने दे। अगले दिन कपड़े को निकालकर दो तीन बार पानी में अच्छी तरह से धोए।

ब्लीचिंग करना

एक बाल्टी में 200 ग्राम ब्लीचिंग पावडर और आधा कप पानी मिलाएं और इसका अच्छी तरह से पेस्ट बना ले और ध्यान रखे कि इसमें कोई भी गुठली न छूट जाए। अब इसमें 15 लीटर पानी डालने के बाद ढक्कन लगाकर आधे घंटे के लिए छोड़ दे। अब इसके बाद 10 लीटर पानी को एक दूसरी बाल्टी में महीन कपड़े की सहायता से छान कर अलग निकाल ले, जिससे ब्लीचिंग पावडर के कण इसमें न आ सके। अब एक दूसरे टब में 12 लीटर पानी ले और ब्लीचिंग पावडर वाले पानी को उसमे डाल कर मिला दे। अब कपड़े को इस टब में 2 से 3 मिनट हिलाते रहना है नहीं तो कपड़े का रंग अलग दिखाई देगा।

कपड़े की धुलाई करना

अब (पीतल, लोहे या ताम्बे) के टब में उतना ही पानी ले जितने में पूरा कपड़ा डूब जाए। फिर पानी को उबाल ले। 30 ग्राम कपड़े धोने का सोडा, 10 ग्राम स्लरी, 10 ग्राम तरल केमिकल डाले। इसे 30 मिनट तक उबाले, यह ध्यान रखे की कपड़े को गरम पानी से निकाले और बहुत अच्छी तरह से धोए।

डिजाईन बनाना और कपड़े पर उतारना

डिजाईन बनाना और कपड़े पर उतारना एक काम ही नहीं है बल्कि एक महत्वपूर्ण कला है।

बटर पेपर पर डिजाईन बनाने की तैयारी

रेत या बालू को चलनी से अच्छी तरह से छान ले जिससे केवल बारीक़ रेत ही नीचे बची रहे क्योंकि इससे डिजाईन बनाना आसान हो जाता है।

लंबी मेज़ पर फैलाए गए रेत या बालू के ऊपर बटर पेपर को रख कर सुई की मदद से बटर पेपर में छोटे–छोटे छेद करे। डिजाईन बनाते समय ध्यान रखे कि लाइनों के ऊपर भी छेद करते जाए नहीं तो डिजाईन खराब हो सकती है।

बटर पेपर को अच्छी तरह कपड़े पर बिछा दे। यह ध्यान में रखे कि इसके बीच का भाग हिले नहीं।

अब एक कपड़ा ले जिसका आकार 8X8 हो। इसमें लगभग 200 ग्राम नील रख कर एक धागे के माध्यम से एक पोटली की तरह बना ले।

बटर पेपर के ऊपर नील फैला दे जिससे यह डिजाईन छेदों के द्वारा नीचे के कपड़े पर छप जाए।

बटर पेपर को ठीक से हटाए ताकि यह खराब न हो और इसका उपयोग बाद में भी किया जा सके।

बटिक के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला ब्रश बनाने का तरीका

संस्थान में रहने वाली महिलाओं द्वारा कंघी करने के बाद जो बाल टूट जाते या झड़ जाते हैं तो उन्हें इधर–उधर फेंकने, गंदगी फैलाने नहीं दिया जाता हैं। देखा गया है कि बालों के गुच्छे बाथरूम/टायलेट में फंस जाने से पाईप लाइन बंद हो जाते है। बरली संस्थान में इन्हीं बालों को इक्ट्ठा करके बटिक छपाई हेतु ब्रश बनाया जाता है जिसे कपड़े पर मोम लगाने के काम में लिया जाता है। वैसे बाज़ार में घोड़े के बालों से बना हुआ यह ब्रश लगभग 50 रूपए में मिलता है।

कपड़े पर मोम लगाना

मोम लगाना देखने में जितना सरल लगता है उतना सरल नहीं है। इंसान के बाल से बनाए गए बटिक ब्रश को मोम में डुबाए। इससे उसमें मोम जमा हो जाएगा यदि ब्रश नया है तो 15 से

20 मिनट तक डुबाए और अगर पुराना है तो जैसे ही मोम को गरम करने के लिए रखते है वैसे ही पूरे ब्रश को मोम में डुबो कर रखे। जब ब्रश मोम सोख ले तो उसे निकालने के बाद ब्रश को हाथ में पकड़ कर 1 से 2 मिनट तक रखे और जब तक उसमे बूंद बूंद आने न लगे तब तक हाथ में ही रखे। जब मोम थोड़ा कम कम गिरने लगे ब्रश से उन जगहों पर डिजाईन बनाएँ। बड़े डिजाईन बनाने के लिए बड़े ब्रश का उपयोग करे और छोटे डिजाईन बनाने के लिए छोटे ब्रश का उपयोग करना चाहिए। जिस जगह पर मोम लगाया गया है वह जगह सफ़ेद या कपड़े के जैसी बनी रहेगी। जब रंगाई की पहली परत हो

जाए उसके बाद डिजाईन पर निर्भर करता है कि उस जगह पर फिर से मोम लगाना पड़ेगा या नहीं।

मोम लगाते समय ध्यान रखने वाली सावधानियां

प्रिंटिंग के दौरान मोम या किसी अन्य प्रकार से कपड़े गंदे हो सकते है। अतः हमेशा एप्रिन का उपयोग करना चाहिए। इससे कपड़े में आग लगने का भी डर नहीं रहता।

नील पावडर में नमी आ जाती है। डिजाईन साफ़ साफ़ दिखे इसके लिए दर्जी के चॉक से कपड़े पर डिजाईन बनाना चाहिए।

मोम को भी इधर–उधर नहीं रखना चाहिए, क्योंकि मोम आसानी से आग पकड़ लेता है।

मोम से डिजाईन बनाते समय यदि कही भूल से मोम गिर जाए तो उसे कभी भी ठीक नहीं कर सकते है, इसीलिए बेहतर होगा की जब मोम से डिजाईन बना रहे हो तो हमारे दूसरे हाथ में एक कपड़ा होना चाहिए जो किसी भी टपक को कपड़े में समेट ले और बूंद को कपड़े पर न गिरने दे।

रंग व रंगाई करने के तरीके

रंग उसे कहते है जिससे कपड़ो को रंगा जाता है। रंग दो तरह के होते हैं–

प्राकृतिक रंग

रासायनिक रंग

प्राकृतिक रंगः प्राकृतिक रंगो की विशेषता और सबसे बड़ा लाभ यह होता है की प्राकृतिक रंग से रंगे या छपे कपड़ो से शरीर अथवा पर्यावरण को किसी भी तरह की हानि नहीं होती।

रासायनिक रंगः बाज़ार में कई किस्मों के रासायनिक रंग मिलते है, आमतौर पर इन्हें नेप्थाल व पिगमेंट के नाम से पुकारा जाता है। ओजोन रहित रंग के प्रयोग में आने के बाद भारत में बटिक शिल्प कला बड़े पैमाने पर होने लगी है और भारत से दूसरे देशों को भेजने का काम बहुत बढ़ गया है। इसे अपनाने का एक कारण यह भी हो सकता है कि इससे रंगाई करना आसान होता है और पानी भी कम लगता है।

पिगमेंट– ये पानी में नहीं घुलता है। कपड़े पर इसका प्रयोग करने के लिए यह आवश्यक है की इसे किसी पिगमेंट डाई जिसे बाईडंर कहा जाता है, के साथ मिला कर तैयार किया जाता है। इन रंगों का प्रभाव सामान्य कपड़ो पर ही होता है।

कपड़े की रंगाई करना

किसी भी कपड़े को रंगने का सबसे आसान तरीका यह है कि उसे रंग के घोल में डुबो दिया जाए। यह तरीका रंगाई करना कहलाता है। रंगाई के सभी तरीको में एक बार में एक ही रंग का उपयोग कर सकते है।

रंगाई के लिए आवश्यक सामान

प्लास्टिक के तीन बड़े टब, गरम पानी से तैयार किया गया रंग, ठन्डे पानी का रंग, रबर के दो मोटे दस्ताने, एप्रिन, तेल या ग्लिसरीन, पानी, कपड़े सुखाने के लिए जगह, कपड़े फ़साने की चिमटी, प्लास्टिक के दो मग।

कपड़े की रंगाई करने का तरीका

तीन बड़े टब (प्रत्येक में 20 लीटर पानी आना चाहिए) तैयार रखे।

पहले टब में गरम पानी का रंग डाल कर उसमे 20 ग्राम फिटकरी डाल दे।

तीसरे टब में सादा पानी ले।

कपड़े को गरम पानी के टब में डाले। कपड़ा पूरी तरह से इसमें लगभग 10 मिनट तक डूबो कर रखे। इस घोल में कपड़े को लगातार चलाते रहे। अब कपड़े को बाहर निकाल कर उसे ठंडे पानी के रंग के टब में डाल दे। कपड़ा पूरी तरह से इसमें लगभग 10 मिनट तक डुबाए रहे। कपड़े को निकाल कर सादे पानी में अच्छी तरह से धो ले। अब कपड़े को सूखने के लिए डाल दे।

रंगाई करते वक्त निम्न सावधानिया ध्यान में रखना आवश्यक है:

रंगाई में ध्यान रहे कि पूरे कपड़े पर रंग एक सा चढ़ना चाहिए।

रंग पूरे कपड़े के अंदर तक पहुँचना चाहिए।

धूप और सामान्य धुलाई से रंग छूटना नहीं चाहिए।

सफल बटिक प्रिंटर (छपाई करने वाली) के गुण

काम ही पूजा: दुनिया में कोई भी काम बड़ा या छोटा नहीं होता। सबसे बढ़िया इंसान वही होते है जो अपनी आमदनी का साधन एक नेक व्यवसाय को बनाते है और अपने परिवार के पालन करने के साथ साथ अपनी कमाई ईश्वर के प्रेम के लिए अपने सगे संबंधियो पर भी खर्च करते है।

ईमानदारी: बटिक प्रिंटर को हर काम ईमानदारी से करना चाहिए। कपड़े में रंग या जिस भी वस्तु को उपयोग कर रहे है उसमे कोई मिलावट नहीं करनी चाहिए।

विश्वासपात्रता: हर काम को एक अनुक्रम से करना चाहिए। जिस तरह का कपड़ा काम में लिया है उसका दाम उसी हिसाब से बताना चाहिए। एक बार ग्राहक को विश्वास हो गया तो उसका विश्वास हमेशा के लिए बना कर रखना चाहिए।

संयम: इंसान के पास ही संयम की क्षमता व शक्ति है। काम करते वक्त जल्दबाज़ी नहीं करनी चाहिए। यदि कोई ग्राहक बटिक प्रिंटर को उसकी गलती के बारे में बताए तो बटिक प्रिंटर को ध्यान से सुनना चाहिए।

आत्मविश्वास: बटिक प्रिंटर को अपने काम को करते समय डरना नहीं चाहिए। काम करते समय यह सोचना चाहिए कि कितनी आसानी से और कितनी जल्दी किया जा सकता है।

बटिक प्रिंटर की योग्यता

योजना बनाकर काम करना: योजना बनाने का मतलब है पहले से सोच विचार कर के पहले क्या करना है उसके बाद क्या करना है और कब। जैसे रंग है या नहीं, कपड़े पर डिजाईन ठीक बन रही है या नहीं। योजना बना कर काम करने से समय, पैसे व मेहनत सभी की बचत होती है। योजनाबद्ध तरीके से काम करने से अच्छा काम होता है जिससे संतोष भी मिलता है।

ग्राहक को संतुष्ट करना: ग्राहक को जैसी डिजाईन चाहिए, जैसा रंग चाहिए, व जिस नाप का चाहिए उसे वैसे ही बना कर देना चाहिए।

नई तकनीक से परिचित: इस ज़माने में प्रचलन और तकनीक जल्दी बदल जाते है। नयी तकनीक को सीखना आवश्यक है ताकि काम ज़माने के साथ चल सके।

खरीदने, बेचने और बाज़ार की जानकारी: कोई भी व्यवसाय करने वाले के लिए बाज़ार में से थोक में सामान खरीदना चाहिए और कच्चे माल के भाव और तैयार सामान के भाव की जानकारी हर समय लेते रहना चाहिए। क्योंकि इसी बात पर निर्भर है कि कितने में सामान खरीदना और बना कर बेचना है।

बटिक सीखने से लाभ

यदि महिलाएं यह कार्य सीखती है तो वह अपनी जीविका आसानी से चला सकती है। यह कार्य वो अपने आसपास की लड़कियों को प्रशिक्षण देकर सिखा सकती है। बटिक प्रिंटिंग से बनाए गए कपड़ों की बाज़ार में बिक्री कर सकती है। बरली संस्थान लड़कियों को इसका प्रशिक्षण दे रहा है और इसमें इसे काफी हद तक कामयाबी मिल रही है। यह एक ऐसी कला है जिसे न सिर्फ सीख कर एक व्यक्ति कलाकार बनता है बल्कि यह कमाने का भी बहुत बड़ा जरिया है।

संस्थान के समाचार

प्रशिक्षणार्थियों ने दी ओपन स्कूल की परीक्षा

संस्थान की 75 प्रशिक्षणार्थियों ने छह महीने में पढ़ना–लिखना एवं सिलाई–कढ़ाई सीखी तथा 5 मई को राष्ट्रीय ओपन स्कूल

द्वारा आयोजित परीक्षा देने के लिए गई। इसमें छात्राओं को राष्ट्रीय ओपन स्कूल का प्रमाण पत्र मिलेगा।

दीक्षांत समारोह

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान में 10 मई को अपना 100 वाँ प्रशिक्षण कार्यक्रम पूरा किया हैं। इस उपलक्ष्य में 10 मई 2011 को 100 वाँ दीक्षांत समारोह कार्यक्रम संस्थान परिसर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि दाह चन्देरी की प्रमुख श्रीमती मनु हसीजा थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता की मलेशिया से आई फिजियोथिरापिस्ट डॉ. मुबीना

जेयाबालन ने। विशेष अतिथि थे यू. के. में जल संसाधन इंजीनियर श्री काशिफ शाद। संस्थान के निदेशक मंडल के सदस्य डॉ. शीरिन महालाती और डॉ. गीता हांडा भी कार्यक्रम में उपस्थित थी। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा एक सुन्दर प्रार्थना के बाद, अतिथियों का संस्थान में बनाई गई कलाकृतियों से स्वागत किया गया। संस्थान की निदेशिका श्रीमती ताहेरा जाधव ने संस्थान का परिचय दिया और कहा कि ''यह संस्थान बहाई धर्म की शिक्षाओं पर आधारित है। जिनकी प्रमुख शिक्षा है स्त्री–पुरूष समानता''। उन्होंने सारे प्रशिक्षणार्थियों को छः महीने के समय में साक्षरता, सिलाई, स्वास्थ्य, बागवानी, बटिक की शिक्षा प्राप्त करने की बधाई दी। इन्ही से सहमति जताते हुए बोर्ड मेम्बर्स डॉ. शीरिन महालाती और डॉ. गीता हांडा ने सभी को बधाई दी और स्व. श्री जीम्मी मगिलिगन को श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि श्रीमती मनु हसीजा ने कृतज्ञता प्रकट कि बरली संस्थान ने इस समारोह का हिस्सा होने का अवसर दिया। उन्होंने सभी प्रतिभागियों को

सर्टिफ़िकेट प्रदान किए। जिन 10 प्रशिक्षणार्थियों ने सोलर ट्रेनिंग ली उन्हें एस. के 14 सोलर कुकर भी भेट किए गए। विशेष अतिथि यू. के. से श्री काशिफ शाद और मलेशिया से आई डॉ. मुबीना ने इन प्रतिभागियों में आए परिवर्तन पर खुशी जताते हुए आशा जताई कि वे यह परिवर्तन की लहर अपने गांव तक ले जाएँगी। इस अवसर पर प्रशिक्षणार्थियों ने भी अपने अनुभव बांटे और मधुर गीतों से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। आभार प्रदर्शन संस्थान के कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने किया और कार्यक्रम का समापन श्री जिम्मी मगिलिगन की याद में दिवंगतो की प्रार्थना से किया गया। इस 100 वें प्रशिक्षण कार्यक्रम में मध्य प्रदेश की धार, आलीराजपुर, खरगोन, बुरहानपुर, खण्डवा, बड़वानी, बैतुल और इंदौर के ग्रामीण व आदिवासी क्षेत्रों के 44 गावों की 90 प्रशिक्षणार्थियों ने 6 माह का प्रशिक्षण पूरा किया है।

सोलर कुकर का प्रशिक्षण

संस्थान की 10 प्रशिक्षणाथियों को 3 दिन का सोलर कुकर का प्रशिक्षण दिया गया। इसमें उन्होंने सोलर कुकर जोड़ना और

उस पर खाना बनाना सीखा। यह प्रशिक्षण कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव के मार्गदर्शन में श्री सखाराम, श्री भारत और सुन्दर भाभी ने दिया।

नई निदेशिका एवं कार्यपालक अधिकारी का पद ग्रहण

डॉ. जनक पलटा मगिलिगन की सेवानिवृत्त के बाद श्रीमती ताहेरा जाधव संस्थान की नई निदेशिका हैं। पढ़ाई में आगे,

वह हमेशा अपने स्कूल और विश्वविद्यालय की मेरिट लिस्ट में आ चुकी हैं।

संचार प्रौद्योगिकी में स्नात्तुत्तर श्रीमती ताहेरा जाधव को इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ाने का 12 वर्षों का अनुभव हैं। वह सूरीनाम (दक्षिण अमेरिका) में एक वर्ष प्रोग्राम एनालिस्ट के रूप में काम कर चुकी हैं। बहाई होने के नाते वह भोपाल के आसपास के कई गाँव विशेषकर छावनी पठार, पडरिया, आदमपुर, खजूरी कलां में महिलाओं, किशोरों और बच्चों से जुड़ी कई गतिविधियां आयोजित कर चुकी हैं। उन्हें महिलाओं के विकास, शिक्षा, स्वाबलंबन और उनके अधिकार में विशेष रूचि हैं। उन्हें कविताएँ और लेख लिखना का शोक हैं। अपने देश–विदेश के अनुभव, बुलंद इरादों और महिलाओं के उत्थान के लिए समर्पित अपने जज्बे से वह संस्थान को उपलब्धि के नए सौपान पर ले जाने के लिए प्रयासरत् हैं।

श्री योगेश जाधव बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान के नए कार्यपालक अधिकारी हैं। वह स्व. श्री जिम्मी मगिलिगन के स्थान पर संस्थान का प्रबंधन संभाल रहे हैं।

योगेश जीजाजी बहुमुखी प्रतिभा के धनि हैं। विश्व प्रख्यात आई. आई.एफ़.एम. नाम की संस्था से उन्होंने वन प्रबंधन में उच्च शिक्षा प्राप्त की हैं। उन्हें विकास, पर्यावरण, प्रबंधन, शोध,

स्नात्तुत्तर शिक्षण जैसे क्षेत्रों में 14 वर्षो का अनुभव हैं। वह अपने शोध पत्रों को जापान, ताइवान, इंडोनेशिया, चीन, जर्मनी, स्विज़रलैंड, फ्रांस, इटली, नेथरलैंड, इजिप्त, इक्वुंदोर आदि 13 देशो में जाकर प्रस्तुत कर चुके हैं।

उन्हें पर्यावरण से बेहद प्रेम हैं। वह भोपाल के समीप के कई गाँवों में हजारों, पेड़ लगा चुके हैं और धार, हरदा, धमतरी, बिलासपुर, झाबुआ, रायसेन आदि क्षेत्रों में ग्रामीणों के लिए कार्यशालाओं का आयोजन कर चुके हैं।

वह बहाई समुदाय के भी एक सक्रीय सदस्य हैं और बहाई गतिविधियों में पूर्णतया से समर्पित हैं।

जीजाजी एक प्रतिभाशाली गायक भी हैं और उन्हें फोटो

खीचने का भी बेहद शोक हैं।

संस्थान देखने आए मेहमान

⇒मई 28, 2011 को खरगोन बहाई समुदाय का युवा दल

संस्थान देखने आया। कार्यपालक अधिकारी श्री योगेश जाधव ने उनको संस्थान का भ्रमण कराया। आदिवासी और ग्रामीण महिलाओं में अध्यात्म और ज्ञान के माध्यम से हो रहे बदलाव को जानकार वे बहुत प्रेरित हुए।

⇒मई 7, 2011 को 50 किशोरों का दल जो स्थानीय बहाई केंद्र, इंदौर में "संस्कार" नामक कार्यक्रम में भाग ले रहे थे, संस्थान देखने आए। श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान दिखाया। सौर ऊर्जा के प्रयोग को देखकर वे सभी बहुत आश्चर्यचकित हुएँ।

⇒मई 25, 2011 को देश भर के 35 गैर सरकारी संस्थाओं के प्रतिनिधि राष्ट्रीय जन सहयोग एवं बाल विकास संस्थान के

माध्यम से संस्थान देखने आए। श्रीमती ताहेरा जाधव ने उनका स्वागत किया और संस्थान की जानकारी दी तथा श्री योगेश जाधव ने उन्हें संस्थान का भ्रमण कराया। सभी ने महिलाओं के उत्थान के लिए हो रहे प्रयासों को सराहा।

बरली की दुनिया ऑनलाईन भी है। इसके पहले वाले अंक www.barli.org के our publications में देख सकते हैं।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी

श्रीमती ताहेरा जाधव, श्रीमती ढेडी बागदरे, सुश्री नेहा घोष और सुश्री जैनब खातून

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

हमें पत्र लिखें

"बरली की दुनिया" के पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप हमें नीचे लिखे पते पर पत्र लिखें कि आपको नियमित "बरली की दुनिया" मिल रही है या नहीं।

संपादक "बरली की दुनिया"

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180 भमोरी, न्यू देवास रोड, इंदौर 452010 (म.प्र.) फोन न. 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित **संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन**